भारत की मातृभाषा सर्वेक्षण

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में गृह मंत्रालय (HNM) द्वारा देश की 576 भाषाओं की फील्ड वीडियोग्राफी के साथ भारतीय मातृभाषा सर्वेक्षण (एमटीएसआई) पूरा किया गया |

गृह मंत्रालय की 2021-22 की वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया कि , "प्रत्येक देशी मातृभाषा के मूल का संरक्षण और विश्लेषण करने के लिए, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (NIA) में एक वेब-संग्रह स्थापित करने की योजना बनाई जा रही है |"

मदर टंग सर्वे ऑफ़ इंडिया (MTSI) क्या है ?

- रिपोर्ट के अनुसार, भारत की मातृभाषा सर्वेक्षण परियोजना ,जो "मातृभाषाओं का सर्वेक्षण करती है, में दो या अधिक जनगणना दशकों की भाषा का पूर्ण ब्यौरा तैयार करती है |" यह चयनित भाषाओं की भाषायी विशेषताओं का दस्तावेजीकरण भी करती है|
- रिपोर्ट के अनुसार, NIC और राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (NFDC) द्वारा ऑडियो-वीडियो फाइलों में सर्वेक्षण की गई मातृभाषाओं के भाषायी डेटा का दस्तावेजीकरण और संरक्षण किया जायेगा | मातृभाषाओं के वीडियो-ग्राफ किए गए भाषणों के डेटा संग्रह के उद्देश्यों से इसे एनआईसी सर्वेक्षण पर भी अपलोड किया जायेगा |

भारत की कुल "मातृभाषाएं" और सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा -

- 2018 में भाषायी जनगणना के आंकड़ों के विश्लेषण के अनुसार, भारत में 19,500 से अधिक भाषाएँ या बोलियाँ मातृभाषा के रूप में बोली जाती हैं |
- भारत के रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त के अनुसार 19,569 भाषाओं की जांच, संपादन और युक्तिकरण के बाद, उन्हें 121 मातृभाषाओं में बांटा गया |
- 2011 की भाषायी जनगणना के अनुसार, हिंदी सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली मातृभाषा है, जिसमें 52.8 करोड़ लोग या 43.6 प्रतिशत आबादी इसे अपनी मातृभाषा मानती है |
- दूसरी ,सबसे बड़ी भाषा बंगाली है, जो 9.7 करोड़ व्यक्तियों के लिए मातृभाषा, और जनसंख्या के 8 प्रतिशत हिस्से को कवर करती है |

बच्चों की शिक्षा में मातृभाषा का स्थान कहाँ है?

- शिक्षा के मूलभूत चरणों के लिए नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) की सिफारिश की गयी जिसके तहत 8 वर्ष तक के बच्चों के लिए स्कूलों में मातृभाषा शिक्षा का प्राथमिक माध्यम होना चाहिए |

- प्राथमिक स्कूली शिक्षा के माध्यम से मातृभाषा पर ध्यान केंद्रित करना, विशेष शिक्षा नीति का अंग रहा है नयी एनसीएफ, जो प्री-स्कूल और कक्षा 1 औए 2 से संबंधित है, शिक्षा के प्राथमिक माध्यम के रूप में मातृभाषा के गुणों पर जोर देती है |
- NCF के अनुसार, अनुसंधान से प्राप्त साक्ष्य प्रारंभिक अवस्था और उसके बाद के दौरान बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाने के महत्व की पुष्टि करते हैं | "चूंकि बच्चे अपनी घरेलू भाषा में अवधारणाओं को सबसे तेजी से और गहराई से सीखते हैं, इसलिए शिक्षा का प्राथमिक माध्यम बच्चे की घरेलू मातृभाषा या फाउंडेशनल स्टेज में परिचित भाषा ही रखनी होगी |"

जीएम कपास और बढ़ता शाकनाशी दबाव

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने जीएम कपास की बढ़ती खेती की बुवाई पर नकेल कसने के लिए ग्लाइफोसेट शाकनाशी की बिक्री को प्रतिबंधित कर दिया है |

जल्द ही सुप्रीम कोर्ट द्वारा ट्रांसजेनिक हाइब्रिड सरसों और कपास सहित सभी जड़ी-बूटियों को सहन करने वाली फसलों पर प्रतिबंध लगाने की माँग वाली याचिका पर सुनवाई भी सरकार के इस निर्णय का कारण मानी जा रही है |

ग्लाइफोसेट क्या है?

- यह एक शाकनाशी है जिसका उपयोग खरपतवारों को मारने के लिए किया जाता है अर्थात वे अवांछनीय पौधे जो पोषक तत्वों, पानी और धूप के लिए फसलों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं|
- चूंकि खरपतवार मूल रूप से फसलों की कीमत पर उगते हैं, इसलिए किसान उन्हें हटा देते हैं या शाकनाशी रसायनों का छिड़काव करते हैं |
- ग्लाइफोसेट एक व्यापक-स्पेक्ट्रम शाकनाशी है जो विभिन्न प्रकार के खरपतवारों को भी नियंत्रित कर सकता है |साथ ही यह अधिकांश पौधों को मार रहा है | यह जब पौधों पर छिड़का जाता है, तो यह **प्रोटीन 5-एनोलपाइरुविल्शिकिमेट-3-फॉस्फेट सिंथेज़ (EPSPS)** के उत्पादन को रोकता है | केवल पौधों और सूक्ष्मजीवों द्वारा निर्मित यह एंजाइम सुगंधित अमीनो एसिड का संश्लेषण करता है जो पौधों के विकास के लिए आवश्यक है|
- कीटनाशक अधिनियम, 1968 के तहत उपयोग के लिए पंजीकृत रसायन के विभिन्न सांद्रता वाले नौ ग्लाइफोसेट-आधारित फॉर्मूलेशन उपलब्ध हैं | ये बड़े पैमाने पर चाय बागानों और गैर-फसल क्षेत्रों जैसे रेलवे ट्रैक या खेल के मैदानों में खरपतवार नियंत्रण के लिए स्वीकृत हैं |
- किसान खरपतवारों को साफ करने के लिए सिंचाई चैनलों और मेड़ों पर ग्लाइफोसेट छिड़कते हैं, जिससे पानी का प्रवाह और उनके माध्यम से चलना आसान हो जाता है | इसके अलावा, मेड़ों पर उगने वाले खरपतवार, कवक के लिए मेजबान होते हैं, जैसे कि चावल में म्यान ब्लाइट रोग |
- सामान्य तौर पर,ग्लाइफोसेट के उपयोग का दायरा सीमित है क्योंकि यह गैर-चयनात्मक है। इसके संपर्क में आने वाले सभी पौधों को मारने के लिए इसे डिज़ाइन किया गया |

- रसायन आमतौर पर फसल और खरपतवार के बीच अंतर नहीं कर सकता है| इसलिए इसका उपयोग चाय या रबर के बागानों में किया जा सकता है, परन्तु उन खेतों में नहीं जहाँ फसलें और खरपतवार लगभग समान स्तर पर होते हैं|

सरकार द्वारा उठाये गए कदम -

- कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने "ग्लाइफोसेट के उपयोग को स्वास्थ्य के लिए खतरा बताया, जिसमें मनुष्यों और जानवरों के लिए जोखिम शामिल है| " हालाँकि, इसके उत्पादन को प्रतिबंधित न करके केवल इसके उपयोग को "प्रतिबंधित" किया गया है। अब ग्लाइफोसेट और उसके डेरिवेटिव के छिड़काव की अनुमति केवल "कीट नियंत्रण ऑपरेटरों" के माध्यम के द्वारा ही दी जाएगी |
- सामान्य कृषि फसलों में ग्लाइफोसेट की गुंजाइश प्रतिबंधित है | आनुवंशिक संशोधन (जीएम) या ट्रांसजेनिक प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ ही ग्लाइफोसेट आवेदन में वृद्धि हुई है |
- इसमें कपास, मक्का और सोयाबीन जैसे फसल पौधों में एक मृदा के जीवाणु एग्रोबैक्टीरियम ट्यूमफेशियन्स से पृथक 'सीपी4-ईपीएसपीएस' जीन को शामिल किया गया है |
- यह एलियन जीन एक प्रोटीन के लिए कोड तैयार करता है जो ग्लाइफोसेट को EPSPS एंजाइम के साथ बंधने की अनुमति नहीं देता है। इसलिए, उक्त जीएम फसल शाकनाशी के छिड़काव को "सहन" कर सकती है, जो केवल खरपतवारों को मारती है |
- अकेले 2019 में, दुनिया भर में लगभग 81.5 मिलियन हेक्टेयर में हर्बीसाइड-टॉलरेंट (HT) जीएम फसलों को बोया गया था| वैश्विक ग्लाइफोसेट बाजार सालाना 9.3 अरब डॉलर का है, जिसमें जीएम फसलों के कारण 45 प्रतिशत से अधिक उपयोग होता है |
- भारत की आधिकारिक तौर पर व्यावसायिक खेती , एकमात्र जीएम फसल बीटी कपास है| इसमें दो एलियन जीन ('क्राई1एसी' और 'क्राई2एबी') मृदा के जीवाणु बैसिलस थुरिंजिनेसिस से हैं, जो अमेरिकी बॉलवर्म के लिए जहरीले प्रोटीन के लिए कोड, स्पॉटेड बॉलवर्म और तंबाकू कैटरपिलर कीट हैं |

समस्या

- केंद्र और राज्य सरकारें अवैध एचटी कपास की खेती को रोकने में सफल हो रही हैं| बीज की अवैध बिक्री पर अंकुश लगाने में विफल रहने के बाद, केंद्र सरकार समस्या को जड़ से खत्म करने की कोशिश कर रही है |

ग्लाइफोसेट पर स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ

- विश्व स्वास्थ्य संगठन की इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (IARC) ने मार्च, 2015 में ग्लाइफोसेट को "मनुष्यों के लिए कार्सिनोजेनिक" के रूप में वर्गीकृत किया था | लेकिन यह "शुद्ध" ग्लाइफोसेट के प्रयोग से जानवरों में कैंसर के कारण पर आधारित था |
- दूसरी ओर, अमेरिकी पर्यावरण संरक्षण एजेंसी ने माना है कि "ग्लाइफोसेट के वर्तमान उपयोग से मानव स्वास्थ्य के लिए चिंता का कोई जोखिम नहीं है" और इसका "कोई सबूत नहीं है" कि इससे कैंसर हो सकता है |
- यूरोपीय रसायन एजेंसी ने भी निष्कर्ष निकाला है कि "ग्लाइफोसेट को एक कार्सिनोजेनिक, म्यूटाजेनिक (डीएनए परिवर्तन का कारण) या रिप्रोटॉक्सिक पदार्थ के रूप में वर्गीकृत करना उचित नहीं है| "

- केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय की जेनेटिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति (जीईएसी) ने दिल्ली विश्वविद्यालय की जीएम हाइब्रिड सरसों को व्यावसायिक रूप से जारी करने की सिफारिश की थी | यह फसल ग्लाइफोसेट के समान एक गैर-चयनात्मक शाकनाशी ग्लूफ़ोसिनेट अमोनियम के छिड़काव को भी सहन कर सकती है | जीईएसी आगे ग्लाइफोसेट-सहिष्णु बीटी कपास को मंजूरी देने के लिए तैयार है, जिसकी अवैध खेती एक खुला रहस्य है|

भारत ने किया G-20 लोगो का अनावरण किया

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने G -20 की वर्चुअल मीटिंग में लोगो जारी किया, जिस पर कमल के फूल के साथ-साथ वेबसाइट और थीम का भी अनावरण किया गया |

लोगो के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, पीएम मोदी ने कहा, "दुनिया एक सदी में एक बार विनाशकारी महामारी, संघर्ष और बहुत सारी आर्थिक अनिश्चितता के बाद के प्रभावों से गुजर रही है | G-20 लोगो में कमल का प्रतीक इन समयों में आशा का प्रतिनिधित्व करता है| कितनी भी विपरीत परिस्थितियाँ क्यों न हों, कमल खिलता ही रहता है |"

G -20 Logo

- G20 लोगो नारंगी और हरे रंग का है, साथ में एक पृथ्वी का ग्लोब और एक खिलता हुआ कमल दिखाई दे रहा है, जिसमें सात पंखुड़ियाँ हैं |
- विदेश मंत्रालय के अनुसार, भारत के G-20 प्रेसीडेंसी का विषय **वसुधैव कुटुम्बकम - एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य** है|
- "कमल पर सात पंखुड़ियां दुनिया के सात महाद्वीपों और संगीत के सात स्वरों का प्रतिनिधित्व करती हैं| G-20 दुनिया में सद्भाव भावना लाएगा और इस लोगो में कमल का फूल भारत की पौराणिक विरासत, हमारी आस्था, हमारी बुद्धि का चित्रण कर रहा है |

जी-20 देश -

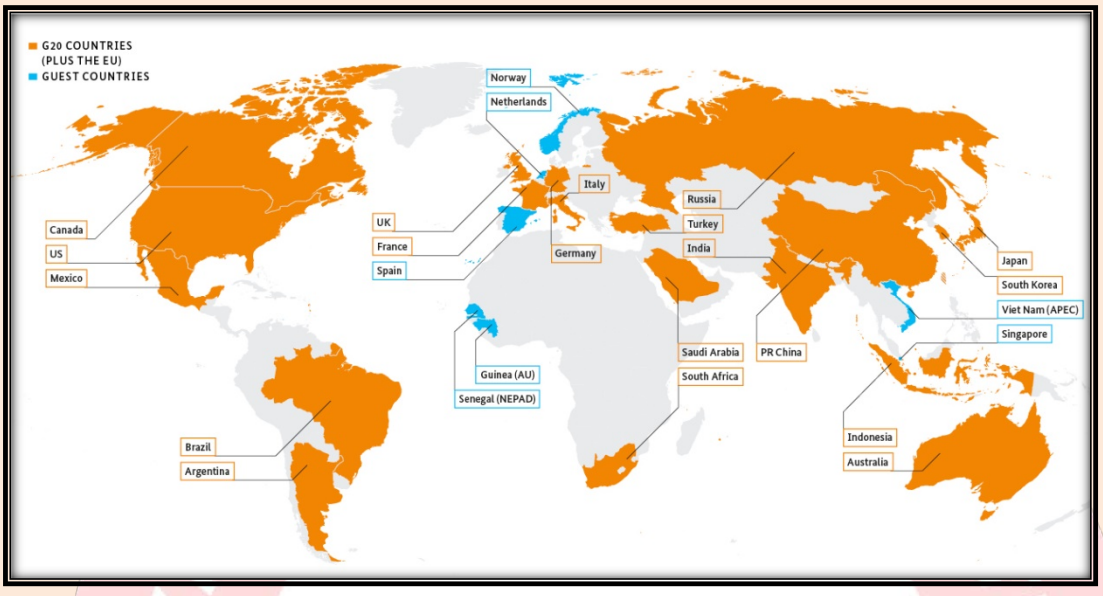

किसान उत्पादक संगठनों (FPO) का गठन और संवर्धन

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में "10,000 किसान उपज संगठनों (एफपीओ) का गठन और संवर्धन" नामक एक नई केंद्रीय क्षेत्र की योजना शुरू की गयी |

किसान उत्पादक संगठन क्या है ?

- FPOs, किसान-सदस्यों द्वारा नियंत्रित स्वैच्छिक संगठन होते हैं और FPOs के सदस्य इसकी नीतियों के निर्माण और निर्णयन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं |
- FPOs की सदस्यता लैंगिक , सामाजिक, नस्लीय, राजनीतिक या धार्मिक भेदभाव के बिना उन सभी लोगों के लिये खुली होती है जो इसकी सेवाओं का उपयोग करने में सक्षम हैं|

प्रमुख बिंदु –

- कृषि क्षेत्र, आर्थिक विकास और राष्ट्र निर्माण दोनों में बहुत अहम् भूमिका निभाता है |
- भारत विश्व स्तर पर कृषि के विकास में सबसे आगे है और इसने 2022 के अंत तक निर्यात को दोगुना करने का लक्ष्य रखा है| देश में 86% से अधिक किसान छोटे और सीमांत हैं| हमारे किसानों को बेहतर तकनीक, ऋण, बेहतर इनपुट और अधिक बाजारों तक पहुंच प्रदान करने की आवश्यकता है जिससे उन्हें बेहतर गुणवत्ता वाली वस्तु का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है |
- इसके लिए छोटे, सीमांत और भूमिहीन किसानों को FPO में शामिल करने से किसानों की आय बढ़ाने के लिए उनकी आर्थिक मजबूती और बाजार से जुड़ाव बढ़ाने के लिए भारत सरकार ने बजटीय

प्रावधान के साथ देश में 10,000 नए FPO बनाने और बढ़ावा देने के लिए एक स्पष्ट रणनीति अपनायी है |

FPO के लाभ

- FPO को उपज समूहों में विकसित किया जाना है, जिसमें कृषि और बागवानी उत्पादों हेतु बड़े पैमाने पर अर्थव्यवस्थाओं का लाभ उठाने और सदस्यों के लिए बाजार पहुंच में सुधार के लिए उगाया जाता है| जैसे -विशेषज्ञता और बेहतर प्रसंस्करण, विपणन, ब्रांडिंग और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए "एक जिला, एक उत्पाद" क्लस्टर| इसके अलावा कृषि मूल्य श्रृंखला संगठन FPO बनाते हैं और सदस्यों के उत्पादों के लिए 60% बाजार लिंकेज की सुविधा प्रदान करते हैं|

भारत का पहला निजी तौर पर विकसित प्रक्षेपण यान: विक्रम-एस

चर्चा में क्यों ?

हैदराबाद स्थित स्काईरूट द्वारा निर्मित विक्रम-एस श्रीहरिकोटा में देश के एकमात्र स्पेसपोर्ट से अपनी पहली उड़ान भरने के लिए तैयार है, जिससे यह भारत का पहला निजी तौर पर विकसित लॉन्च वाहन बन जाएगा|

मिशन का कोड नाम 'प्रथम' है।

प्रथम मिशन के बारे में

- यह भारत में निजी क्षेत्र की शुरुआत को चिह्नित करेगा |
- निजी तौर पर निर्मित रॉकेट और उपग्रहों के विकास को 2020 में अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी भागीदारी से बढ़ावा मिल रहा है |
- स्काईरूट अपना रॉकेट लॉन्च करने वाली पहली निजी कंपनी होगी|
- इसरो के लघु उपग्रह प्रक्षेपण यान (SSLV) को भी जल्द ही निजी कंपनियों द्वारा निर्मित और संचालित किए जाने की संभावना है।

इसरो द्वारा लॉन्च किए गए निजी उपग्रह मिशन:

- इसरो के सबसे भारी प्रक्षेपण यान मार्क III ने 36 वनवेब उपग्रहों को लॉन्च किया | इसरो कंपनी के लिए 36 उपग्रहों का एक और बेड़ा भी लॉन्च करेगा|

विक्रम-एस रॉकेट

- यह सिंगल-स्टेज सब-ऑर्बिटल लॉन्च व्हीकल है| जो एक उप-कक्षीय उड़ान में 3 पेलोड ले जाएगा|
- 3 पेलोड में एक अन्य अंतरिक्ष स्टार्टअप, स्पेस किड्ज इंडिया का 2.5 किलोग्राम का उपग्रह है, जिसे भारत, अमेरिका और इंडोनेशिया के छात्रों द्वारा तैयार किया गया है|

- उप-कक्षीय उड़ान वाले वाहन वे हैं जो कक्षीय वेग से धीमी गति पर यात्रा कर रहे हैं, जिसका अर्थ है कि यह बाहरी अंतरिक्ष तक पहुंचने के लिए पर्याप्त तेज़ है लेकिन पृथ्वी के चारों ओर कक्षा में रहने के लिए पर्याप्त तेज़ नहीं है|
- इसे पृथ्वी के औसत समुद्र तल से लगभग 80 किमी से अधिक की दूरी के रूप में परिभाषित किया गया है| यह विक्रम श्रृंखला के अंतरिक्ष प्रक्षेपण वाहनों में प्रौद्योगिकियों के परीक्षण और सत्यापन में मदद करेगा|
- कंपनी 3 विक्रम रॉकेट डिजाइन कर रही है जो 290 किलोग्राम और 560 किलोग्राम पेलोड को सूर्य-तुल्यकालिक ध्रुवीय कक्षाओं में ले जाने के लिए ठोस और क्रायोजेनिक ईंधन का उपयोग करेंगे |
- विक्रम-I 480 किलोग्राम पेलोड को पृथ्वी की निचली कक्षा में ले जा सकता है| इसे कलाम-100 रॉकेट द्वारा संचालित किया जाएगा|
- विक्रम-द्वितीय 595 किलोग्राम कार्गो के साथ उठाने के लिए सुसज्जित है|
- विक्रम-III 815 किलो से 500 किमी लो इनक्लिनेशन ऑर्बिट के साथ लॉन्च कर सकता है|
- विक्रम साराभाई को श्रद्धांजलि देने के लिए स्काईरूट के लॉन्च वाहनों का नाम '**विक्रम**' रखा गया है|

अंतरिक्ष क्षेत्र के निजीकरण का महत्व

- **उच्च स्वायत्तता**: निजी कंपनियों के पास निर्णय लेने में अधिक स्वायत्तता होती है, जो उन्हें नई परियोजनाओं को शुरू करने में सक्षम बनाती है |
- **त्वरित निर्णय लेना:** निजी कंपनियों में त्वरित निर्णय लेना होता है जबकि सार्वजनिक उद्यम में समान प्रक्रिया को कई चरणों से गुजरना पड़ता है|
- पुन: प्रयोज्य लैंडिंग रॉकेट लॉन्चर बनाने में सहायक|
- **बेहतर रोजगार के अवसर:** अंतरिक्ष उद्योग में वृद्धि दुनिया भर में लाखों लोगों को रोजगार भी प्रदान करती है और निजी अंतरिक्ष कंपनियों की संख्या में वृद्धि उनके बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती है |
- **व्यापक रुचि पैदा करना:** लाइव स्ट्रीमिंग लॉन्च जैसे उनके संचालन के प्रचार ने आम जनता के बीच अंतरिक्ष अन्वेषण में व्यापक रुचि जगाई है|

तमिलनाडु पुलिस और 50 वर्ष पुरानी मूर्ति

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में 12 मई, 1971 को, तमिलनाडु के तंजावुर जिले में नादानपुरेश्वर मंदिर से 7वीं शताब्दी की देवी पार्वती की मूर्ति सहित 5 मूर्तियों की चोरी के मामले को सुलझा लिया गया है|

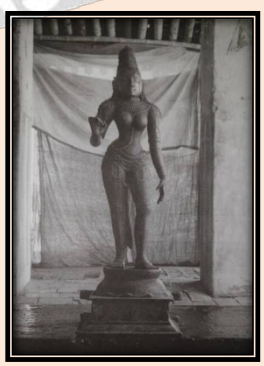

प्रमुख बिंदु

- चोरी के अवशेषों के किसी भी निशान के लिए पुस्तकालयों और अभिलेखागार की खोज से प्रयास शुरू किया गया |यह प्रयास उन्हें पुडुचेरी के फ्रांसीसी संस्थान तक ले गई |जहाँ 1957 में मंदिर से ली गई पार्वती और अन्य लापता मूर्तियों की श्वेत-श्याम तस्वीरें प्राप्त हुई |

- मंदिरों में मूर्तियों को वापस करने की प्रक्रिया अदालतों द्वारा संचालित की जाती है|

द्रविड़ मंदिर स्थापत्य शैली

- कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक द्रविड़ शैली के मंदिर पाए जाते हैं |
- द्रविड़ शैली की विशेषताओं में- प्राकार (चहारदीवारी), गोपुरम (प्रवेश द्वार), वर्गाकार या अष्टकोणीय गर्भगृह (रथ), पिरामिडनुमा शिखर, मंडप (नंदी मंडप) विशाल संकेन्द्रित प्रांगण तथा अष्टकोण मंदिर संरचना शामिल हैं|

- इसमें मंदिर बहुमंजिला होते हैं|
- पल्लवों ने द्रविड़ शैली को जन्म दिया और चोल काल में इसने ऊंचाईयां हासिल की तथा विजयनगर काल के बाद से यह ह्रासमान हुई|
- चोल काल में द्रविड़ शैली की वास्तुकला में मूर्तिकला और चित्रकला का संगम पाया गया|
- यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर (चोल शासक राजराज प्रथम द्वारा निर्मित) 1000 वर्षों से द्रविड़ शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है|
- द्रविड़ शैली के अंतर्गत ही नायक शैली का विकास हुआ, जिसके उदाहरण हैं- मीनाक्षी मंदिर (मदुरै), रंगनाथ मंदिर (श्रीरंगम, तमिलनाडु), रामेश्वरम् मंदिर आदि|

THE STUDY
MAA PHALESHU KADAACHAN
An Institute for IAS